RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
नवम्बर
21
2024

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors
13. Index

COP16
COLOMBIA
Paz con la Naturaleza

By Ankit Avasthi Sir

गुयाना और बारबाडोस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपने सर्वोच्च सम्मान देने की घोषणा / Guyana and Barbados announced their highest honors to Prime Minister Narendra Modi

हाल ही में **गुयाना और बारबाडोस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपने सर्वोच्च सम्मान** देने की घोषणा की है। **गुयाना पीएम मोदी को "ऑर्डर ऑफ एक्सीलेंस" से सम्मानित करेगा, जबकि बारबाडोस उन्हें "ऑनररी ऑर्डर ऑफ फ्रीडम ऑफ बारबाडोस"** प्रदान करेगा।

मुख्य बिंदु

- **गुयाना**: पीएम मोदी को **"द ऑर्डर ऑफ एक्सीलेंस,"** जो गुयाना का सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान है, से सम्मानित किया जाएगा।
- **बारबाडोस**: पीएम मोदी को **"ऑनररी ऑर्डर ऑफ फ्रीडम ऑफ बारबाडोस"** से सम्मानित किया जाएगा।
- **नाइजीरिया**:
  - इससे पहले नाइजीरिया ने पीएम मोदी को अपना दूसरा सबसे बड़ा राष्ट्रीय सम्मान **"ग्रैंड कमांडर ऑफ द ऑर्डर नाइजर"** प्रदान किया था।
  - मोदी यह सम्मान पाने वाले दुनिया के दूसरे विदेशी नेता बने।
  - इससे पहले यह सम्मान 1969 में ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ को दिया गया था।
- अब तक पीएम मोदी को **19 देशों से राष्ट्रीय सम्मान** मिल चुके हैं।
- **डोमिनिका** ने भी हाल ही में उन्हें अपना सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया था।

अब तक **19 देशों ने पीएम मोदी** को विभिन्न सम्मान दिए हैं। इन देशों में **सऊदी अरब, अफगानिस्तान, फिलिस्तीन, संयुक्त अरब अमीरात, रूस, मालदीव, बहरीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, भूटान, पापुआ न्यू गिनी, फिजी, मिस्र, फ्रांस, ग्रीस, डोमिनिका, और नाइजीरिया** शामिल हैं। इन देशों द्वारा पीएम मोदी को उनके वैश्विक नेतृत्व और योगदान के लिए सर्वोच्च नागरिक और राजकीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

गुयाना: दक्षिण अमेरिका का एक महत्वपूर्ण देश

- **आधिकारिक नाम:** कोपरेटिव रिपब्लिक ऑफ़ गुयाना।
- **स्थान:**
  - दक्षिण अमेरिका के उत्तर-मध्य भाग में स्थित।
  - अमेज़न नदी के उत्तर और ओरिनोको नदी के पूर्व में।
- **इतिहास:**
  - 'गुयाना' शब्द का ऐतिहासिक उपयोग हॉलैंड के तीन उपनिवेशों (एस्सेक्यूबो, डेमेरारा, और बेरबिस) के लिए किया गया।
  - सबसे पहले पुर्तगालियों ने शासन किया।
  - लगभग 200 वर्षों तक यह क्षेत्र अंग्रेजों के अधीन रहा।
- **जनसंख्या और जातीय विविधता:**
  - 43.5% लोग भारतीय मूल के हैं।
  - 30.2% अफ्रीकी मूल के हैं।
  - 16.7% मिश्रित जाति और 9.6% अन्य जातीय समूहों के लोग हैं।
- **धर्म:**
  - 57% लोग ईसाई धर्म का पालन करते हैं।
  - लगभग 30% लोग हिंदू धर्म को मानते हैं।

वन डे, वन जीनोम" पहल / "One Day, One Genome" initiative

भारत के **जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) और जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान और नवाचार परिषद (BRIC)** ने "वन डे, वन जीनोम" पहल की शुरुआत की है।

- ✓ इस परियोजना का उद्देश्य भारत की सूक्ष्मजीव संपदा को मानचित्रित करना और कृषि, पर्यावरण तथा मानव स्वास्थ्य में सूक्ष्मजीवों की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करना है।
- ✓ यह पहल 9 नवम्बर 2024 को नई दिल्ली स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इम्यूनोलॉजी (NII) में BRIC के पहले स्थापना दिवस पर अमिताभ कांत द्वारा लॉन्च की गई।
- ✓ इसके तहत जीनोम अनुक्रमण का उपयोग करके सूक्ष्मजीवों की अद्वितीय प्रजातियों के महत्व और उनके संभावित लाभों को सामने लाया जाएगा।

वन डे, वन जीनोम" पहल:

"वन डे, वन जीनोम" पहल के तहत जीनोम अनुक्रमण और शोध की संभावनाएं अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। इस पहल से सूक्ष्मजीवों की कार्यक्षमताओं का गहन अध्ययन संभव होगा, जिससे कई क्षेत्रों में नए दृष्टिकोण प्राप्त होंगे।

1. **जीन संबंधी जानकारी**: शोधकर्ताओं के लिए यह पहल महत्वपूर्ण एंजाइम, जैव सक्रिय यौगिक, और रोगाणुरोधी प्रतिरोध से संबंधित जानकारी का अध्ययन करने का अवसर प्रदान करेगी।
2. **पर्यावरण प्रबंधन**: सूक्ष्मजीवों के जीनोम पर आधारित शोध पर्यावरणीय प्रबंधन, उन्नत कृषि प्रथाओं, और स्वास्थ्य देखभाल समाधानों में क्रांति ला सकता है।
3. **नवाचार का आधार**: यह पहल नई खोजों और स्थायी समाधानों को प्रेरित करेगी, जो समाज के लिए लाभकारी साबित हो सकती हैं।

सूक्ष्मजीवों का महत्व

- सूक्ष्मजीव जैव रासायनिक चक्रों, मृदा उर्वरता, अपशिष्ट विघटन और मीथेन उत्पादन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।
- कृषि में, ये पोषक तत्वों का परिसंचरण, नाइट्रोजन स्थिरीकरण, कीट नियंत्रण और पौधों के तनाव प्रतिक्रियाओं में सहायता करते हैं।

जीनोम (Genome): किसी भी जीव के डीएनए (या कुछ वायरस के मामले में आरएनए) में मौजूद संपूर्ण आनुवंशिक सामग्री का संग्रह है। यह वह निर्देश सेट है जो किसी जीव के विकास, कार्य, प्रजनन और जीवन चक्र को नियंत्रित करता है। जीनोम में जीन और गैर-कोडिंग डीएनए दोनों शामिल होते हैं।

जीनोम के प्रमुख तत्व

1. **गुणसूत्र (Chromosomes):**
   - जीनोम को कई खंडों में व्यवस्थित किया जाता है, जिन्हें गुणसूत्र कहा जाता है।
   - मनुष्यों में, प्रत्येक कोशिका में 23 जोड़े गुणसूत्र होते हैं (कुल 46), जिनमें से एक सेट माता और दूसरा पिता से प्राप्त होता है।
   - माइटोकॉन्ड्रिया (कोशिका की ऊर्जा उत्पादन इकाई) में भी एक छोटा गोलाकार डीएनए अणु होता है, जिसे माइटोकॉन्ड्रियल जीनोम कहा जाता है।
2. **जीन (Genes):**
   - जीनोम में मौजूद सक्रिय खंड जिन्हें जीन कहा जाता है, प्रोटीन और आरएनए का उत्पादन करने के लिए आवश्यक निर्देश प्रदान करते हैं।
   - मनुष्यों में अनुमानतः 20,000-25,000 जीन होते हैं।
3. **गैर-कोडिंग डीएनए (Non-coding DNA):**
   - जीनोम का बड़ा हिस्सा कोडिंग नहीं होता, यानी यह प्रोटीन का निर्माण नहीं करता।

जीनोम का महत्व

1. **आनुवंशिक विविधता:**

जीनोम अध्ययन से जीवों की आनुवंशिक विविधता को समझने में मदद मिलती है।

यह विभिन्न प्रजातियों के बीच और एक ही प्रजाति के सदस्यों के बीच भिन्नताओं का कारण बताता है।

2. **रोगों की समझ:**

जीनोम विश्लेषण से यह समझने में मदद मिलती है कि आनुवंशिक परिवर्तन (mutations) बीमारियों का कारण कैसे बनते हैं।

उदाहरण: कैंसर, डायबिटीज और आनुवंशिक विकारों का अध्ययन।

3. **जीनोम अनुक्रमण:**

इसमें जीनोम में मौजूद प्रत्येक आधार (एडेनिन, थाइमिन, गुआनिन, साइटोसिन) की सटीक व्यवस्था का निर्धारण किया जाता है।

भूख और गरीबी के खिलाफ वैश्विक गठबंधन / Global Alliance Against Hunger and Poverty

रियो डी जेनेरियो में आयोजित 19वें जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान, **भूख और गरीबी के खिलाफ वैश्विक गठबंधन (Global Alliance)** की शुरुआत की गई। इस पहल का उद्देश्य दुनिया से भूख और गरीबी को जड़ से समाप्त करना है।

इस पहल का **उद्देश्य 2030 तक भूख खत्म करना और 500 मिलियन लोगों को गरीबी से बाहर** निकालना है।

ब्राजील के राष्ट्रपति के अनुसार-

ब्राजील के राष्ट्रपति **लुइज़ इनासियो लूला दा सिल्वा** ने एफएओ (खाद्य और कृषि संगठन) के आंकड़ों का हवाला देते हुए कहा:

- ✓ 2024 तक **733 मिलियन लोग** अल्पपोषण का सामना कर रहे है।
- ✓ यह संख्या ब्राजील, मैक्सिको, जर्मनी, यूके, दक्षिण अफ्रीका और कनाडा की कुल आबादी के बराबर है।
- ✓ यह स्थिति उस दुनिया में अस्वीकार्य है जो प्रति वर्ष **6 बिलियन टन भोजन** का उत्पादन करती है, लेकिन जहां सैन्य खर्च **2.4 ट्रिलियन डॉलर** तक पहुंचता है।
- ✓ उन्होंने इसे मानवता के लिए एक बड़ा अन्याय बताया, जहां भोजन के अधिकारों का हर दिन उल्लंघन हो रहा है।

भारत का समर्थन और योगदान

प्रधानमंत्री **नरेंद्र मोदी** ने इस पहल के लिए भारत के समर्थन की पुष्टि की और खाद्य सुरक्षा और गरीबी उन्मूलन के लिए भारत की उपलब्धियों का उल्लेख किया।:

- ○ **250 मिलियन लोगों** को गरीबी से बाहर निकाला गया।
- ○ **800 मिलियन लोगों** को मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध कराया जा रहा है।
- ○ **550 मिलियन लोग** दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना का लाभ उठा रहे हैं।
- ○ **60 मिलियन वरिष्ठ नागरिक** (70 वर्ष से अधिक आयु के) मुफ्त स्वास्थ्य बीमा के लिए पात्र बनाए गए हैं।

✓ **महिला सशक्तिकरण**: पीएम मोदी ने महिला नेतृत्व वाले विकास को बढ़ावा देने के लिए भारत के प्रयासों को रेखांकित किया।

ग्लोबल अलायंस की कार्य संरचना

1. एफएओ का योगदान:

- ✓ यह गठबंधन का **तकनीकी मुख्यालय** होगा।
- ✓ एफएओ अपनी स्वायत्तता बनाए रखेगा।

2. वित्त पोषण और सहयोग:

- ✓ ब्राजील ने 2030 तक गठबंधन की **50% लागत का वित्त पोषण** करने की प्रतिबद्धता जताई है।
- ✓ जर्मनी, नॉर्वे, पुर्तगाल और स्पेन जैसे देशों ने अतिरिक्त वित्तीय योगदान देने की घोषणा की है।

3 रणनीतिक पहल:

- ○ **नियमित शिखर सम्मेलन** आयोजित करना।
- ○ कार्यों की निगरानी, जवाबदेही और प्रगति सुनिश्चित करने के लिए **उच्च स्तरीय चैंपियंस परिषद** का गठन।

ग्लोबल अलायंस का उद्देश्य

✓ **भुखमरी और गरीबी को खत्म करना**:

- ○ **गठबंधन का लक्ष्य 2030 तक 500 मिलियन लोगों को गरीबी से बाहर निकालना है।**

सामाजिक सुरक्षा:

सामाजिक सुरक्षा और नकद हस्तांतरण के माध्यम से कमजोर आबादी की गरिमा को बहाल करना।

वैश्विक एकजुटता:

विकसित देशों, वित्तीय संस्थानों, और गैर-सरकारी संगठनों को मिलकर ठोस कदम उठाने के लिए प्रेरित करना।

ब्राज़ील ने जी-20 की अध्यक्षता दक्षिण अफ्रीका को सौंपी / Brazil handed over the presidency of G-20 to South Africa

ब्राजील ने रियो डी जनेरियो में आयोजित 19वें वार्षिक G20 शिखर सम्मेलन के समापन समारोह में औपचारिक रूप से दक्षिण अफ्रीका को G20 की अध्यक्षता सौंपी। यह पहली बार किसी अफ्रीकी राष्ट्र को G20 का नेतृत्व सौंपा गया है। दक्षिण अफ्रीका ने अपनी अध्यक्षता के लिए एक महत्वाकांक्षी और समावेशी एजेंडा प्रस्तुत किया है।

ब्राजील से दक्षिण अफ्रीका को G20 अध्यक्षता का हस्तांतरण

प्रतीकात्मक हस्तांतरण:

- ✓ ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला दा सिल्वा और दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा उपस्थित रहे।
- ✓ गैवल (गांवल) बजाने और दोनों नेताओं के हाथ मिलाने के साथ अध्यक्षता का औपचारिक हस्तांतरण हुआ।

दक्षिण अफ्रीका की प्रतिक्रिया

- ✓ राष्ट्रपति रामफोसा ने इस अवसर को सम्मान और गर्व का क्षण बताया।
- ✓ ब्राजील की सफल अध्यक्षता के लिए राष्ट्रपति लूला को बधाई दी, खासतौर पर G20 सामाजिक शिखर सम्मेलन की समावेशी पहल के लिए।

दक्षिण अफ्रीका की G20 अध्यक्षता

थीम: **"एकजुटता, समानता और स्थिरता"।**

प्राथमिकताएँ:

- ✓ समावेशी विकास को बढ़ावा देना।
- ✓ असमानता का समाधान करना।
- ✓ वैश्विक मुद्दों पर सामूहिक कार्रवाई सुनिश्चित करना।

दक्षिण अफ्रीका की अध्यक्षता के मुख्य उद्देश्य

- ✓ सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करना
- ✓ वैश्विक असमानता का समाधान
- ✓ विकास एजेंडा को आगे बढ़ाना

G20: परिचय

G20 क्या है?

- G20 या ग्रुप ऑफ़ ट्वेंटी एक अंतर-सरकारी मंच है जिसमें **19 देश और यूरोपीय संघ (EU)** शामिल हैं।
- यह मंच दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं (विकसित और विकासशील दोनों) का प्रतिनिधित्व करता है।

महत्व और प्रभाव

- G20 दुनिया के **सकल विश्व उत्पाद (GWP)** का लगभग 90% योगदान करता है।
- यह अंतरराष्ट्रीय व्यापार का 75-80%, वैश्विक जनसंख्या का दो-तिहाई और विश्व के भूमि क्षेत्र का लगभग आधा कवर करता है।

स्थापना और उद्देश्य

- **G20 की स्थापना 1999** में कई वैश्विक आर्थिक संकटों के जवाब में की गई थी।
- इसका उद्देश्य आर्थिक स्थिरता बनाए रखना, वैश्विक चुनौतियों का समाधान करना और समावेशी विकास को बढ़ावा देना है।

सदस्यता और कार्यप्रणाली

- **सदस्य: 19 देश (जैसे अमेरिका, भारत, चीन, जापान, जर्मनी) और यूरोपीय संघ।**
- **प्रतिनिधित्व**: हर साल आयोजित शिखर सम्मेलनों में सदस्य देशों के शासनाध्यक्ष, वित्त मंत्री, विदेश मंत्री और अन्य उच्च अधिकारी भाग लेते हैं।
- **EU का योगदान:** यूरोपीय आयोग और यूरोपीय सेंट्रल बैंक द्वारा EU का प्रतिनिधित्व किया जाता है।

नियमित बैठकें और प्राथमिकताएं

- **2008 से G20** कम से कम एक बार सालाना बैठक करता है।
- ये बैठकें वैश्विक आर्थिक स्थिरता, जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य संकट, और सतत विकास जैसे प्रमुख मुद्दों पर केंद्रित रहती हैं।

सागरमंथन- द ग्रेट ओशंस डायलॉग / Sagarmanthan- The Great Oceans Dialogue

'सागरमंथन- **द ग्रेट ओशंस डायलॉग' दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा समुद्री नेतृत्व शिखर सम्मेलन है, जो भारत सरकार के बंदरगाह, नौवहन और जलमार्ग मंत्रालय (MoPSW) और ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन (ORF) के संयुक्त प्रयास से आयोजित किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य सतत और नवाचारी समुद्री प्रथाओं को प्रोत्साहित करना है।** इसमें 61 देशों के प्रतिनिधि और 1,700 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए, जिनमें वैश्विक नीति निर्माता, उद्योग जगत के अग्रणी, शोधकर्ता और समुद्री विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

मुख्य बिंदु

1. आयोजन का उद्देश्य

- ✓ सतत और नवाचारी समुद्री प्रथाओं को बढ़ावा देना।
- ✓ वैश्विक समुद्री नेतृत्व और सहयोग को प्रोत्साहित करना।

2. प्रतिभागी

- ✓ 61 देशों के प्रतिनिधि।
- ✓ 1,700+ प्रतिभागी, जिनमें नीति निर्माता, उद्योग जगत के अग्रणी और शोधकर्ता शामिल।

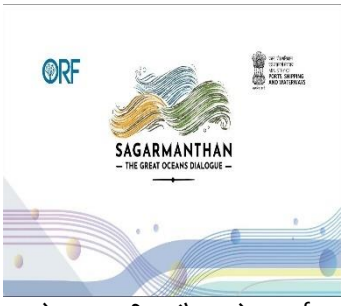

3. भारत का समुद्री दृष्टिकोण

- ✓ **मैरीटाइम विजन 2047:**
  - सततता, कनेक्टिविटी और प्रौद्योगिकी पर आधारित खाका।
- ✓ **महत्वपूर्ण पहलें:**
  - सागरमाला और मैरीटाइम अमृत काल विजन।
  - समुद्री व्यापार में भारत को अग्रणी बनाने की दिशा में काम।

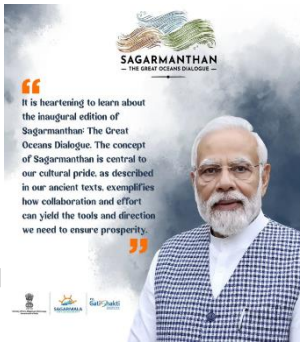

4. सरकार का निवेश और विकास योजनाएँ

- ✓ समुद्री अवसंरचना के विकास में 80 लाख करोड़ रुपये का निवेश।

भारत का समुद्री क्षेत्र: व्यापार और रणनीतिक महत्व

भारत का समुद्री क्षेत्र देश की व्यापार और वाणिज्य प्रणाली की रीढ़ के रूप में कार्य करता है। यह न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है, बल्कि वैश्विक नौवहन और व्यापार में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

मुख्य तथ्य और योगदान

1. **व्यापार में योगदान:** भारत का समुद्री क्षेत्र देश के कुल व्यापार का लगभग 95% मात्रा और 70% मूल्य संभालता है।
   - यह भारत को अंतरराष्ट्रीय व्यापार के एक प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित करता है।
2. **बंदरगाह बुनियादी ढांचा:** देश में 12 प्रमुख बंदरगाह और 200 से अधिक अधिसूचित छोटे और मध्यवर्ती बंदरगाह हैं।
   - यह बुनियादी ढांचा भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है।
3. **वैश्विक नौवहन में भूमिका:**
   - भारत दुनिया का सोलहवां सबसे बड़ा समुद्री राष्ट्र है।
   - पूर्वी एशिया, अमेरिका, यूरोप और अफ्रीका के बीच यात्रा करने वाले अधिकांश मालवाहक जहाज भारतीय जल क्षेत्र से होकर गुजरते हैं।

भारत का समुद्री क्षेत्र: प्रमुख उपलब्धियाँ और योगदान

1. वैश्विक शिपिंग में बढ़ती उपस्थिति

- 2023 तक भारत के पास अपने झंडे के नीचे 1,530 जहाजों का बेड़ा है।
- जहाज रीसाइक्लिंग के मामले में भारत टन भार के आधार पर दुनिया में तीसरे स्थान पर है।

2. बंदरगाह बुनियादी ढाँचे में विस्तार

- 2014-15 से 2023-24 के बीच प्रमुख बंदरगाहों की वार्षिक कार्गो-हैंडलिंग क्षमता में 87.01% वृद्धि (871.52 मिलियन टन से 1,629.86 मिलियन टन)।
- वित्तीय वर्ष 2024 में 819.22 मिलियन टन कार्गो का प्रबंधन, जो पिछले वर्ष की तुलना में 4.45% अधिक है।

3. निर्यात में वृद्धि

- वित्तीय वर्ष 2023 में वाणिज्यिक निर्यात 451 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचा, जो वित्तीय वर्ष 2022 के 417 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है।

4. स्थायित्व और टिकाऊ विकास

- जहाज रीसाइक्लिंग और बंदरगाह आधुनिकीकरण टिकाऊ समुद्री कार्यप्रणालियों और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में भारत की भूमिका को मजबूत करते हैं।

प्रमुख निवेश योजनाएँ

- ✓ बंदरगाह बुनियादी ढांचे के लिए USD 82 बिलियन (2035 तक)।
- ✓ वधावन, महाराष्ट्र में नया बंदरगाह: जून 2024 में ₹76,220 करोड़ (USD 9.14 बिलियन) की लागत से मंजूर।
- ✓ शिपबिल्डिंग वित्तीय सहायता नीति: प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए ₹337 करोड़ (USD 40.40 मिलियन) की सहायता।

समुद्री क्षेत्र में सरकारी योजनाएँ:

- ✓ सागरमाला कार्यक्रम
- ✓ समुद्री भारत दृष्टि (MIV) 2030
- ✓ अंतर्देशीय जलमार्ग विकास
- ✓ ग्रीन टग ट्रांज़िशन प्रोग्राम (GTTP)

दूसरा भारत-ऑस्ट्रेलिया वार्षिक शिखर सम्मेलन / 2nd India-Australia Annual summit

भारत और ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री ने रियो डी जनेरियो में आयोजित G20 शिखर सम्मेलन के दौरान **दूसरी भारत-ऑस्ट्रेलिया वार्षिक शिखर बैठक (2nd India-Australia Annual)** की।

शिखर बैठक के मुख्य परिणाम

1. **द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति**
   - ✓ जलवायु परिवर्तन, नवीकरणीय ऊर्जा, व्यापार, निवेश, रक्षा, शिक्षा, और लोगों के बीच संबंधों में महत्वपूर्ण प्रगति पर चर्चा की गई।
2. **आर्थिक सहयोग**
   - भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता (ECTA): व्यापार और बाजार पहुंच को बढ़ावा दे रहा है।
     एक व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता (CECA) की दिशा में कार्य चल रहा है।
   - ऑस्ट्रेलिया-भारत व्यापार एक्सचेंज (AIBX): अगले चार वर्षों के लिए बढ़ाया गया, ताकि व्यापारिक संबंधों को और मजबूत किया जा सके।
3. **ऊर्जा और पर्यावरण**
   - भारत-ऑस्ट्रेलिया नवीकरणीय ऊर्जा साझेदारी (REP): सोलर पैनल, हरित हाइड्रोजन, और ऊर्जा भंडारण में सहयोग।
   - खानिज बिदेश लिमिटेड और ऑस्ट्रेलिया के क्रिटिकल मिनरल्स ऑफिस के बीच समझौता, ताकि साफ ऊर्जा के लिए आवश्यक खनिजों को बढ़ावा दिया जा सके।
4. **अंतरिक्ष सहयोग**
   - ✓ गगनयान मिशन और ऑस्ट्रेलियाई उपग्रहों को भारतीय वाहनों से 2026 में लॉन्च करने के लिए सहयोग बढ़ रहा है।

5. **रक्षा और सुरक्षा**
   - संयुक्त रक्षा और सुरक्षा घोषणा (2025) का नवीनीकरण।
   - म्यूचुअल लॉजिस्टिक्स सपोर्ट एग्रीमेंट के तहत बढ़ते रक्षा अभ्यास और सहयोग।
   - भारत और ऑस्ट्रेलिया के रक्षा उद्योगों के बीच सहयोग, जिसमें रक्षा प्रदर्शनी और उद्योग दौरों का आयोजन होगा।
6. **संसदीय सहयोग**
   - ✓ रणनीतिक साझेदारी के तहत इंटर-पार्लियामेंट्री सहयोग पर जोर दिया गया।
7. **शिक्षा, लोग-से-लोग (People-to-People) और गतिशीलता**
   - ✓ वर्किंग हॉलिडे मेकर वीजा प्रोग्राम और MATES मोबिलिटी योजना को पेश किया गया, जिससे पेशेवरों के बीच अधिक सहयोग हो सके।
   - ✓ बेंगलुरू और ब्रिसबेन में नए वाणिज्य दूतावास खोलने की योजना बनाई गई।
   - ✓ ऑस्ट्रेलियाई विश्वविद्यालयों का भारत में कैम्पस स्थापित करना और खेल विज्ञान में संयुक्त पहलों पर चर्चा की गई।
8. **क्षेत्रीय और बहुपक्षीय सहयोग**
   - Indo-Pacific क्षेत्र में स्वतंत्र, खुले और समावेशी दृष्टिकोण पर सहमति।
   - क्वाड पहल, ASEAN केंद्रीयता, और Indian Ocean Rim Association (IORA) जैसे क्षेत्रीय संगठनों का समर्थन।
9. **आतंकवाद और वैश्विक मुद्दे**
   - ✓ आतंकवाद से लड़ने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की और FATF पहल में सहयोग बढ़ाने पर चर्चा की।

भारत-ऑस्ट्रेलिया व्यापारिक संबंध

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच व्यापारिक संबंध समय के साथ मजबूत हुए हैं। 2023 के अनुसार, भारत ऑस्ट्रेलिया का छठा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है, और दोनों देशों के बीच व्यापार में निरंतर वृद्धि हो रही है।

2022 व्यापार आंकड़े:

- 2022 में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच व्यापार 41% बढ़कर US$31.4 बिलियन तक पहुँच गया।
- भारत ने US$8.7 बिलियन का निर्यात किया, जिसमें प्रमुख वस्त्र, औषधियाँ, और आभूषण शामिल थे।
- ऑस्ट्रेलिया से आयात US$22.5 बिलियन था, जिसमें कोयला और प्राकृतिक गैस शामिल हैं।

वर्तमान व्यापार स्थिति (2024):

- भारत ने जून 2024 में ऑस्ट्रेलिया को US$873 मिलियन का निर्यात किया, जबकि आयात US$1.13 बिलियन रहा।
- इस दौरान US$253 मिलियन का व्यापार घाटा हुआ, मुख्यतः पेट्रोलियम और कृषि रसायन में गिरावट के कारण।

ECTA समझौता:

- भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता (ECTA) 29 दिसंबर 2022 से लागू हुआ।
- इस समझौते के तहत ऑस्ट्रेलिया से 85% निर्यात शुल्क मुक्त हो गया, जो 2026 तक 90% तक बढ़ेगा।
- भारत के 96% निर्यात अब ऑस्ट्रेलिया में शुल्क मुक्त हैं।

आर्थिक सहयोग और रणनीतियाँ:

- भारत और ऑस्ट्रेलिया ने CECA समझौते पर वार्ता फिर से शुरू की है।
- AIBX और इंडिया इकोनॉमिक स्ट्रैटेजी 2035 जैसी पहलें व्यापार को नई ऊंचाई दे रही हैं।

व्यापार का महत्व

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच यह व्यापारिक सहयोग दोनों देशों के आर्थिक और रणनीतिक संबंधों को सुदृढ़ करता है। यह सहयोग व्यापार, ऊर्जा, रक्षा, और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में नए अवसर पैदा करता है और दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं को विविधता प्रदान करता है।

इंदिरा गांधी पुरस्कार-2023 / Indira Gandhi Prize-2023

हाल ही मे **मशहूर पियानो वादक डैनियल बरेनबोइम और शांति कार्यकर्ता अली अबू अव्वाद को इंदिरा गांधी पुरस्कार-2023** से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें शांति, निरस्त्रीकरण और विकास के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए दिया गया।

पुरस्कार विजेताओं का चयन और पुरस्कार समारोह:

- पुरस्कार विजेताओं का चयन **पूर्व प्रधान न्यायाधीश टी.एस. ठाकुर** की अध्यक्षता वाले निर्णायक मंडल ने किया।
- पुरस्कार समारोह वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से आयोजित हुआ, जिसमें **सोनिया गांधी, एम. हामिद अंसारी, शिव शंकर मेनन, न्यायमूर्ति टी.एस. ठाकुर** और अन्य प्रमुख हस्तियाँ शामिल थीं।
- **अली अबू अव्वाद**, जिन्होंने इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार प्राप्त किया, ने कहा कि उन्होंने जेल में रहते हुए अहिंसा की शक्ति को समझा।
- अव्वाद ने यह भी बताया कि उन्होंने महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के बारे में बहुत कुछ पढ़ा है, और ये दोनों भारतीय नेता उन्हें प्रेरित करते हैं।
- अव्वाद के अनुसार, उन्होंने गांधीजी और नेहरूजी से यह सीखा कि "एक-दूसरे को पहचानने और एक-दूसरे की रक्षा करने की हमारी क्षमता ही हमें मनुष्य बनाती है।"

क्यों चुना गया है:

- **डैनियल बैरनबोइम** को इसलिए चुना गया है क्योंकि उन्होंने संगीत को एकजुट करने के एक उपकरण के रूप में उपयोग किया है। उनका मानना है कि संगीत, जो भावनाओं और विचारों को पार करता है, लोगों के बीच सांस्कृतिक और राजनीतिक तनाव को कम करने में मदद कर सकता है।
- **अली अबू अव्वाद** को इसलिए चुना गया है क्योंकि उन्होंने अहिंसा को बढ़ावा दिया और फिलिस्तीनियों और इजरायलियों के बीच संवाद स्थापित करने के लिए मंचों का निर्माण किया, जैसे "रूट्स" (Roots)। उनका उद्देश्य इन दोनों समुदायों के बीच समझ और सहयोग को बढ़ावा देना है ।

समारोह और संदेश:

वर्चुअल रूप से आयोजित पुरस्कार समारोह में प्रमुख हस्तियों ने भाषण दिए।

- ✓ पूर्व विदेश सचिव शिव शंकर मेनन ने विजेताओं के काम को “अनुकरणीय” बताया।
- ✓ हामिद अंसारी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे उनके प्रयास युवाओं को फिलिस्तीन जैसे क्षेत्रों में शांति की तलाश करने के लिए प्रेरित करते हैं, जहाँ संघर्ष कई लोगों के जीवन को प्रभावित करते हैं।
- ✓ अंसारी ने एक ऐसे भविष्य के निर्माण के महत्व पर भी जोर दिया जहाँ मतभेदों का सम्मान किया जाता है और उनका जश्न मनाया जाता है।

इंदिरा गांधी पुरस्कार: एक परिचय

इंदिरा गांधी पुरस्कार, भारत की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के सम्मान में **1986 से हर साल दिया** जाता है। यह पुरस्कार शांति, निरस्त्रीकरण और विकास के क्षेत्र में असाधारण योगदान के लिए व्यक्तियों या संगठनों को प्रदान किया जाता है।

महत्व: यह पुरस्कार शांति और विकास के क्षेत्र में सर्वोच्च सम्मानों में से एक माना जाता है। **पुरस्कार में एक प्रशस्ति पत्र और 25 लाख रुपए का मौद्रिक पुरस्कार** शामिल होता है।

श्रेणियाँ: यह पुरस्कार **तीन श्रेणियों** में दिया जाता है:

1. शांति
2. निरस्त्रीकरण
3. विकास

मान्यता के लिए मानदंड: यह पुरस्कार उन व्यक्तियों या संगठनों को दिया जाता है जिन्होंने **शांति, निरस्त्रीकरण और विकास से संबंधित वैश्विक चुनौतियों** का समाधान करने के लिए असाधारण और निरंतर प्रयास किए हैं। उनके कार्य का अंतर्राष्ट्रीय समुदाय पर सकारात्मक प्रभाव होना चाहिए और उन्हें मानव कल्याण में योगदान देना चाहिए।

इसरो 2040 तक चंद्र मिशन के लिए चंद्र अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करेगा / ISRO to set up lunar space station for lunar mission by 2040

भारत ने 2040 तक चंद्रमा की परिक्रमा करने वाला एक अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने की महत्वाकांक्षी योजना बनाई है। इसका **उद्देश्य पृथ्वी की कक्षा से बाहर एक स्थायी मानव उपस्थिति स्थापित करना है। यह स्टेशन मानवयुक्त चंद्र मिशनों का समर्थन करेगा और वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देने का कार्य करेगा।**

- ✓ इस पहल से भारत के अंतरिक्ष अन्वेषण प्रयासों को एक नया आयाम मिलेगा, और यह अंतरिक्ष अन्वेषण में देश की प्रमुख भूमिका को और भी मजबूत करेगा।

भारत की चंद्र अंतरिक्ष स्टेशन योजना के मुख्य बिंदु:

1. **लक्ष्य: भारत ने 2040 तक चंद्रमा की परिक्रमा करने वाला एक अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने की योजना बनाई है,** जिसका उद्देश्य पृथ्वी की कक्षा से बाहर स्थायी मानव उपस्थिति स्थापित करना है।
2. **चंद्र अंतरिक्ष स्टेशन: यह स्टेशन मानवयुक्त चंद्र मिशनों का समर्थन करेगा और वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देगा।**
3. **इसरो की योजना:** इसरो ने चरणबद्ध दृष्टिकोण अपनाया है, जिसमें पहले चरण में 2028 में चंद्रयान-4 सैंपल-रिटर्न मिशन शामिल है, जिसका उद्देश्य चंद्र नमूने पृथ्वी पर लाना है।
4. **मानवयुक्त चंद्र मिशन:** दूसरे चरण में अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा पर भेजने की योजना है, और प्रधानमंत्री मोदी ने 2035 तक चंद्रमा पर मानव उड़ान और 2040 तक लैंडिंग का लक्ष्य निर्धारित किया है।
5. **अंतरिक्ष यात्री प्रशिक्षण:** इसरो के अंतरिक्ष यात्री बेंगलुरु और रूस में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

चंद्र उपस्थिति का दीर्घकालिक लक्ष्य:

- 2040 तक चंद्रमा की परिक्रमा करने वाला स्टेशन स्थापित करने की योजना।
- स्टेशन का उद्देश्य अंतरिक्ष यात्रियों के लिए बेस और वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए केंद्र बनाना।
- 2050 से पहले एक स्थायी चंद्र बेस स्थापित करने की योजना।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO)

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) भारत का प्रमुख अंतरिक्ष एजेंसी है, जो भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रमों को संचालित करने का कार्य करता है। **इसका गठन 1969 में डॉ. विक्रम साराभाई द्वारा किया गया था**, और तब से यह भारत को अंतरिक्ष अनुसंधान और अन्वेषण में अग्रणी बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है।

मुख्य उद्देश्य और कार्यक्षेत्र: ISRO का मुख्य उद्देश्य अंतरिक्ष विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान के माध्यम से भारत की सामाजिक और आर्थिक प्रगति में योगदान देना है। यह सैटेलाइट प्रक्षेपण, अंतरिक्ष मिशन, दूरसंचार, मौसम विज्ञान, आपदा प्रबंधन, कृषि और पर्यावरण संरक्षण जैसे क्षेत्रों में कार्य करता है।

महत्वपूर्ण मील के पत्थर:

1. **चंद्रयान-1** (2008): यह मिशन भारत का पहला चंद्र मिशन था और इसने चंद्रमा पर पानी के अणुओं की खोज की, जो अंतरिक्ष अन्वेषण में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।
2. **मार्स ऑर्बिटर मिशन (मंगलयान)** (2013): इसरो ने मंगल ग्रह की कक्षा में प्रवेश कर भारत को एक बड़ी अंतरराष्ट्रीय सफलता दिलाई, जिससे भारत मंगल ग्रह पर पहुंचने वाला पहला एशियाई देश बन गया।
3. **चंद्रयान-2** (2019): इस मिशन ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास लैंडर को भेजने का प्रयास किया था, हालांकि लैंडर का संपर्क टूट गया था, लेकिन यह मिशन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण था।
4. **चंद्रयान-3** (2023): इस मिशन के जरिए भारत ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक लैंडिंग की, और यह भारत के लिए एक ऐतिहासिक क्षण था।

भविष्य की योजनाएँ: ISRO के पास कई महत्वाकांक्षी मिशन हैं, जिनमें मंगल और चंद्रमा के और अधिक अन्वेषण, मानव अंतरिक्ष मिशन (गगनयान), और अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाना शामिल है। इसके अतिरिक्त, ISRO 2040 तक चंद्रमा की परिक्रमा करने वाला एक अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने और स्थायी चंद्र बेस बनाने की योजना पर काम कर रहा है।